असत्य से सत्य की ओर

• ब्रह्माकुमार सत्यवीर सिंह डागर, दिल्ली

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िला बुलन्दशहर के एक गाँव में अति साधारण परिवार में हुआ। ग़रीबी के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी और मैं नौकरी की तलाश में दिसम्बर 1975 में दिल्ली आ गया। विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न पदों पर सेवा का अनुभव प्राप्त करते-करते आज मैं दिल्ली पुलिस में इंस्पेक्टर हूँ। सन् 1998 से सन् 2000 के बीच एस.एच.ओ. (थाना इंचार्ज) सीमापुरी, दिल्ली रहा। मेरा स्वभाव अति क्रोधी था। मैं मामूली-सी बात भी सहन नहीं कर पाता था। एक साल बीत गया। यह प्रोफेशन के हिसाब से बहुत ही सफल समय था। पुलिस हैडक्वार्टर तक में मेरी एक खास छवि बन गई थी। बदमाश मेरा नाम सुनकर थर्राते थे। इस अप्रत्याशित सफलता से मैं घमंड से चूर हो गया था। मैं आदमी को आदमी नहीं समझता था। मुख में हर वक्त गाली और गंदी ज़बान रहती थी। मेरे जैसा निर्दयी शायद ही कोई पुलिस अफसर हो। मेरी दृष्टि बहुत गंदी थी। बाबा अपनी मुरलियों में जिस अजामिल जैसे पापी का ज़िक्र करते हैं, वो मैं ही था।

जब मैं आश्रम चलने के लिए तैयार हुआ

अगस्त 1999 की बात है। एक भाई श्री मुकेश कुमार आहूजा, जो कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली में पब्लिक प्रोसिक्यूटर थे, निजी काम से मेरे ऑफिस आये। बातचीत करते हुए उन्होंने मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय दिया और सीमापुरी क्षेत्र में दिलशाद गार्डन सेवाकेन्द्र पर अपने साथ मुझे लेकर चलने के लिए कहा परन्तु मैंने यह कहकर टाल दिया कि आज समय नहीं है, फिर कभी सही। अगले दिन उनका फिर टेलिफ़ोन आया। मैंने फिर नया बहाना बना कर टाल दिया। वे भाई लगातार आठ दिनों तक मुझे टेलिफ़ोन करते रहे और मैं रोज़ाना किसी न किसी बहाने से टालता रहा। असल में मैं जाना नहीं चाहता था। मैं उन भाई को सीधे-सीधे मना भी नहीं करना चाहता था क्योंकि प्रोटोकोल के हिसाब से वो मुझसे वरिष्ठ थे। मैं सोचता था कि वे मेरा एक न एक दिन पीछा छोड़ देंगे परन्तु जब उन्होंने फोन करना बंद नहीं किया तो मैंने नौंवे दिन सेवाकेन्द्र पर चलने के लिए हाँ कह दी।

हम लोग जिप्सी में बैठे और सेवाकेन्द्र के लिए चले। मैं गाड़ी चला रहा था और वे भाई मेरे बराबर वाली सीट पर बैठे थे। रास्ते में एक स्थान पर ट्रैफिक फँसा हुआ था। रिक्शा वाले

और थ्री व्हीलर वाले उलझे हुए थे। मैंने पहले हॉर्न बजाया, फिर सायरन बजाया परन्तु रास्ता नहीं खुला। मैंने गाड़ी बन्द की, डंडा उठाया और बजा दिया। कोई इधर भागा, कोई उधर। रास्ता खुल गया। जब मैं वापस गाड़ी की तरफ मुड़ा तो मैंने देखा, भाई जी मुस्करा रहे थे। मेरा हाव-भाव ऐसा था जैसे कि मैंने कोई किला फतह किया हो। मैंने सोचा था कि भाई मेरी इस बहादुरी पर दो शब्द बोलेंगे परन्तु उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। यह मुझसे सहन नहीं हुआ तो मैंने अपनी तारीफ खुद ही कर ली। मैंने कहा, देखा भाई साहब, (गाली देकर) ये लातों के भूत हैं, बातों से नहीं मानते। भाई बोले, आपने इन लोगों को बातों से मनाने की कोशिश कब की? आपने तो जाते ही डंडा बजा दिया। मुझे उस भाई पर बहुत गुस्सा आया। दिल में आया कि मैं उन्हें वहीं गाड़ी से उतार दूँ परन्तु पब्लिक प्रोसिक्यूटर होने की वजह से मैं चुप रहा। इस तरह हम सेवाकेन्द्र पहुँचे। आपने देखा, जब मैं पहली बार सेवाकेन्द्र पर गया तो कितना अभिमानी और अहंकारी था। अपनी

पोज़िशन और रुतबे का कितना घमंड था मुझे।

जब मैं आसमान से धरती पर गिरा

सेवाकेन्द्र पर पहुँचे तो निमित्त बहन जी से भाई साहब ने मेरा परिचय कराया। बहन जी ने बड़े आदर से हमें बैठाया और मुझसे पूछा, भाई साहब, आपका परिचय क्या है? मैंने बड़े गर्व से उत्तर दिया, मैं इंस्पेक्टर सत्यवीर डागर, एस.एच.ओ. सीमापुरी हूँ। बहन जी ने कहा, और? मैंने कहा, मैं 1981 बैच का सब-इंस्पेक्टर हूँ। बहन जी ने कहा, और? मैंने कहा, मैं जाट हूँ, मेरा बुलन्दशहर जिला है यू.पी. में। बहन जी ने धीरे से मुस्कराते हुए फिर कहा, और? मैंने देह अभिमानवश कहा, बहन जी, आप साफ-साफ पूछो ना क्या पूछना चाहते हो? मैं तो आपको अपने बारे में सब कुछ बता चुका हूँ। बहन जी ने मुस्करा कर कहा, भाई साहब, आपने जो कुछ अब तक बताया वो तो आपकी इस फिजीकल बॉडी का लौकिक परिचय था। ये जो हड्डी-माँस का पुतला मेरे सामने बैठा है, ये इंस्पेक्टर सत्यवीर डागर, एस.एच.ओ., सीमापुरी है, यह ही बुलन्दशहर का जाट है। आपकी असली पहचान क्या है?

बहन जी की वाणी में सौम्यता परन्तु दृढ़ता थी। मैंने थोड़ा असहज (irritated) होते हुए कहा, यही तो मेरी असली पहचान है। और क्या है? तब बहन जी ने मुझे समझाया कि आप अपने लिए क्या कहते हो? मेरा शरीर या मैं शरीर? मैंने कहा, मेरा शरीर। तब बहन ने कहा, जब यह शरीर आपका है, आप शरीर नहीं हैं तो फिर आप कौन हैं? मैं चकरा गया। सोच में पड़ गया। कुछ समझ में नहीं आया। मैंने कहा, बहन जी, मुझे नहीं मालूम, मैं कौन हूँ? मैं आसमान से धरती पर गिरा धड़ाम से। मेरी सारी अकड़ निकल गई। अब मेरी अवस्था बड़ी दयनीय थी। बहन जी ने मुझे आत्मा और देह के बारे में विस्तार से समझाया।

मैं सोचने लगा कि जिस चीज़ का मुझे इतना अभिमान था, 'इंस्पेक्टर सत्यवीर डागर, एस.एच.ओ. सीमापुरी' कहते हुए मेरी गर्दन अकड़ जाती थी, वो तो मैं हूँ ही नहीं और जो मैं हूँ, वो मैं जानता ही नहीं। मुझे ऐसे लग रहा था जैसे कि मैं दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख हूँ। एक बात और, जब सेवाकेन्द्र पर रखे पिताश्री ब्रह्मा के चित्र को देखा तो पहली ही दृष्टि में मुझे लगा जैसे कि उन्हें कहीं देखा है, मैं उनसे पहले मिल चुका हूँ परन्तु वो कौन हैं, मैं उनसे कहाँ मिला हूँ, यह मुझे याद नहीं आया। मैंने सोचा, शायद ये इन बहनों के गुरु हैं, मैंने कहीं देख लिया होगा। मैंने बहन जी से भी उनके बारे में उस समय कुछ नहीं पूछा और मैं सेवाकेन्द्र से चला आया। आने से पहले बहन जी ने एक हफ़्ते का कोर्स करने की सलाह दी। मैं सारी रात सो नहीं सका। बहन जी के साथ हुआ वार्तालाप ही दिमाग में घूमता रहा।

जब मुझे संशय ने घेर लिया

मैंने सात दिन का कोर्स पूरा किया। ज्ञान मुझे जल्दी ही समझ में आने लगा। बाबा को भी याद करने लगा। बहन जी कहती थीं कि शिव बाबा को खूब याद करो। कोई भी समस्या हो तो शिव बाबा को बताओ, वो हर मुश्किल आसान कर देते हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि एक घटना ने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया। थाना सीमापुरी के पास एक श्मशान है। एक दिन मैं रात को करीब तीन बजे थाने पहुँचा, श्मशान में उस वक्त भी एक चिता जल रही थी। मैं थाने के रेस्ट रूम में सोने के लिए चला गया। अभी नींद आई ही थी कि अचानक एक भारी-भरकम नौजवान ने मुझे सोते हुए दबोच लिया। मैंने फौरन ही पलट कर वार किया परन्तु मेरा वार खाली गया। मैं समझ गया कि यह कोई बदमाश नहीं है, यह तो भूत है। अब मेरी और भूत की उठा-पटक होने लगी। वो मुझे लात और घूंसों से बड़ी बेरहमी से मार रहा था और मैं कुछ करता तो उसे कुछ होता

नहीं था। उसने मार-मार कर मेरा भूत बना दिया। यह सब कुछ जागृत अवस्था में पूरे होश हवास में हो रहा था।

इस बीच मेरा ध्यान कमरे में जल रही छोटी-सी लाल लाइट (शिव बाबा) की तरफ गया तो मैंने शिव बाबा को पुकारा, बाबा, मुझे बचाओ, बाबा मुझे बचाओ। मैंने बहुत शिव बाबा को पुकारा परन्तु शिव बाबा ने मुझे नहीं बचाया और वो मुझे मारे जा रहा था। फिर आखिर में मैंने हनुमान जी को याद किया। मैंने कहा, हनुमान बाबा, मुझे बचाओ। जैसे ही मैंने हनुमान जी का नाम लिया वो मुझे छोड़कर भाग गया। मैं अगले दिन सेवाकेन्द्र पर गया और सारी घटना बहन जी को सुनाकर मैंने प्रश्न किया कि शिव बाबा ने मेरी मदद क्यों नहीं की? बहन जी इस प्रश्न का कोई ठीक उत्तर नहीं दे सकी। मैंने कहा, हनुमान जी अच्छे हैं जिन्होंने मुझे सही समय पर बचा लिया। मैं फिर शिव बाबा को क्यों याद करूँ? मैं तो हनुमान जी को याद करूँगा। बहन जी ने मुझे बहुत समझाया परन्तु मैंने उनकी एक न सुनी। मैंने शिव बाबा को याद करना बंद कर दिया। अपने कमरे से भी बाबा की लाइट उतार दी। सेवाकेन्द्र पर भी जाना कम हो गया, फिर भी ज्ञान सुनना अच्छा लगता था इसलिए कभी-कभी सेवाकेन्द्र पर जाता रहा।

जब बाबा ने मेरी लाज रखी

मार्च 2000 की बात है। थाना सीमापुरी क्षेत्र से कुछ बदमाशों ने एक चार साल की बच्ची का अपहरण कर लिया और दस लाख रुपये की फिरौती माँगी। बच्ची की माँ विधवा थी। बदमाश धमकी देते थे कि यदि रकम का इंतजाम नहीं किया या पुलिस को खबर की तो बच्ची की लाश के टुकड़े-टुकड़े करके पार्सल से उसके घर भेज देंगे। कॉलोनी के लोग, स्थानीय नेता, मीडिया और वरिष्ठ अधिकारी सभी चिंतित थे। करीब दो हफ़्ते बीत चुके थे। हर संभव कोशिशों के बाद भी अपहरणकर्त्ताओं अथवा बच्ची का कोई सुराग नहीं लग रहा था।

किसी भी पुलिस अफसर के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती होती है। मेरी प्रतिष्ठा दाँव पर थी। मैंने सभी देवी-देवताओं को भी याद किया। हनुमान जी से भी फ़रियाद की परन्तु कुछ नहीं हुआ। आखिर में एक दिन मुझे शिव बाबा की याद आई। सोचा, शिव बाबा को एक बार और आज़मा कर देख लूँ। मैंने बाबा के चित्र के सामने जाकर कहा कि बाबा अगर आप सचमुच कहीं हो तो इस बच्ची को सही सलामत वापस दिला दो। इसके बाद एक पी.सी.ओ. वाले भाई के सहयोग से बदमाश पकड़ा गया। बाद में बच्ची को भी सकुशल बरामद कर लिया और उस बदमाश को साथियों सहित गिरफ़्तार कर लिया। सभी लोगों ने मेरे काम को सराहा और मुझे शाबाशी दी। यहाँ तक कि खचाखच भरी अदालत में माननीय जज साहब ने भी दिल खोलकर पुलिस की कार्यवाही की प्रशंसा की। उन बेचारों को क्या मालूम कि मेरी इस सफलता के पीछे प्यारे शिव बाबा द्वारा प्रदत्त मनोबल और बौद्धिक बल था। शिव बाबा कोई मनुष्य तो है नहीं जो मदद करता हुआ नज़र आये। उसे तो मन की आँखों से देखा जा सकता है। उन्हीं की कृपा से यह असंभव कार्य संभव हो पाया। बाबा ने अपने बच्चे की लाज रख ली।

(क्रमशः)

निस्संदेह, जब तक मनुष्य इस जान (शरीर) और जहान में है तब तक उसमें 'इच्छा' भी बनी रहती है। परन्तु 'योगी' और 'भोगी' की इच्छाओं में दिन-रात का अन्तर होता है। जबकि भोगी की इच्छायें सैकड़ों–हज़ारों होती हैं और वह सभी स्थूल सांसारिक विषयों ही के पीछे पगला हुआ भागता रहता है, योगी सादगी का जीवन व्यतीत करते हुए, सदाचार को अपनाकर अपने मन में केवल यही इच्छा रखता है कि लोगों की अधिकाधिक सेवा करूँ, दिव्य बनूँ, पवित्र बनूँ, परमात्मा के सान्निध्य में रहूँ तथा दुआयें लूँ और दुआयें दूँ।